नवाचारी प्रक्रियाएँ ताकि हर बच्चा सीख सके

अनिल सिंह

राष्ट्रीय पाठचर्या रूपरेखा 2005 के निर्देशक सिद्धान्त साफ़तौर पर कहते हैं ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ा जाए, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया रटन्त आधारित और यांत्रिक न रहे। पाठ्यवस्तु ऐसी होनी चाहिए जो पाठ्यपुस्तक तक सीमित न रहकर बच्चों के समग्र विकास और उनकी समझ बनाने में सहायक हो। परीक्षाएँ लचीली हों और कोई अलग चीज़ न होकर कक्षा-कक्ष की प्रक्रियाओं में निहित हों। स्कूल का वातावरण व शिक्षण-प्रक्रिया लोकतांत्रिक हो।

शिक्षा के सार्वजनीकरण के बाद स्कूलों में नामांकन अभूतपूर्व ढंग से बढ़ा है। तमाम कारणों से बुनियादी शिक्षा से वंचित रह जाने वाले विविध पृष्ठभूमियों के भिन्न दक्षताओं और क्षमताओं वाले बच्चे स्कूल आ रहे हैं। यह उनका मौलिक अधिकार है कि उन्हें बुनियादी शिक्षा मिले। बदली हुई परिस्थितियों में समावेशीकरण के माध्यम से सभी बच्चों को उनकी पूरी गरिमा के साथ स्कूलों में जगह देने की ज़रूरत है। उन्हें यह विश्वास दिलाने की ज़रूरत है कि वे सब कुछ सीख सकते हैं। यह संवैधानिक मूल्यों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के लिए भी ज़रूरी है।

आनन्द निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल, समावेशी और लोकतांत्रिक नज़रिए के साथ चलने वाला एक स्कूल है। विगत आठ सालों के अपने सफ़र में, इसमें आने वाले बच्चे विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के साथ ही विभिन्न शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और बौद्धिक दक्षता वाले रहे हैं। स्कूल के लोकतांत्रिक, बाल-केन्द्रित और समतामूलक वातावरण में यह सभी बच्चे अपनी-अपनी गति और लय के साथ सीखने की उपलब्धियों तक पहुँचे हैं।

यह अनुभव बताते हैं कि हर बच्चा सीख सकता है। ज़रूरत इस बात की है कि सिखाने से जुड़ी हमारी बेचैनी और चिन्ता कम हो, सिखाने वाले के रूप में हम अपने अधिकार प्राप्त बिन्दु को समय-समय पर स्थगित रख पाएँ, बच्चे की अन्तर्निहित क्षमता और रुझान को भाँप पाएँ, उसके लिए सीखने को अर्थपूर्ण और जीवन्त बना पाएँ, उसके ज्ञान और समझ को तरजीह दे पाएँ और उसकी वैयक्तिकता व गरिमा की रक्षा कर पाएँ। फ़िर सीखने के साधन अपने आप बन जाते हैं।

इस आलेख में मैंने पाँच बच्चों की केस स्टडी के माध्यम से अपनी बात रखी है। उदाहरण तो और भी बहुतेरे हैं जिनमें एक स्कूल के रूप में हमने ख़ुद बहुत कुछ सीखा है। हमने बच्चों की ज़रूरतों के अनुसार अपने सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में नवाचार किया और बच्चों ने सीखने की उपलब्धियों में ज़बरदस्त प्रगति की।

इनमें से पहला बच्चा रोहित (7 साल) है जो स्कूल के पास ही बनी एक झुग्गी में रहता है। उसके पिता निरक्षर हैं और कॉलोनी में पानी सप्लाई और प्लम्बिंग का काम करते हैं। बड़ा भाई एक होटल में काम करता है। बहन छोटी है पर रोहित उसे स्कूल लेकर आता है। दूसरी बच्ची बिन्दु (8 साल) है जो गाँव से आई है और मराठी भाषी है। उसे हिन्दी समझने और बोलने में बहुत कठिनाई होती है। वह बहुत डरी हुई थी कि यह सब सीख पाना उसके लिए असम्भव-सा है। तीसरा बच्चा कृष्णा (8 साल) है जो अपने दादाजी के साथ भैंसों के तबेले में रहता है। पास के एक स्कूल में जाता था पर अनियमित होने और अपेक्षित रूप से नहीं सीख पाने के कारण उसे स्कूल से निकाल दिया गया है। वह स्कूल तो आता है पर उसका आत्मविश्वास बुरी तरह से टूटा हुआ है। चौथी बच्ची पूजा (9 साल) है जो हियरिंग इंपेयर्ड है। कॉक्लियर इंप्लांट किया गया है, पर सुनने और बोलने दोनों में ही उसे दिक्क़त है। वह एक नामी प्राइवेट स्कूल में पढ़ती थी, लेकिन स्कूल वालों ने कहा कि उसे स्पेशल स्कूल की ज़रूरत है। उसके अभिभावक समझदार थे, एक क्लीनिकल साइकॉलजिस्ट की सलाह पर उसे आनन्द निकेतन में दाख़िल करा दिया। पाँचवीं बच्ची स्वाति (10 साल) है जिसे बोलने में समस्या थी। वह बोलते समय अटकती भी थी और उसके बोल भी साफ़ नहीं थे। उसमें हीनभावना काफ़ी हद तक घर कर चुकी थी और वह ज़रा-ज़रा सी बातों में रो पड़ती थी।

यह पाँचों बच्चे तीन से आठ साल तक आनन्द निकेतन स्कूल में रहे। इन्होंने अकादमिक क्षेत्र में सीखने के साथ ही अपनी इन कमियों से पार पाने में भी ज़बरदस्त उपलब्धि हासिल की। इससे हमारा यह विश्वास दृढ़ होता गया है कि स्कूल और उसकी प्रक्रियाओं में वांछित बदलाव और सुधार करके, अपने नज़रिए को व्यापक बनाकर हम ऐसा वातावरण बना सकते हैं

जिसमें हर बच्चा अपनी गति, लय, रुझान और सीमाओं के साथ अपेक्षित अकादमिक दक्षताएँ हासिल कर सकता है।

सात साल का रोहित अपने साँवले चेहरे और खड़े बालों के कारण बहुत निराश था। वह स्कूल में बहुत सकुचाया और चुप-चुप सा रहता। अनियमित भी रहता। वह स्कूल के पास एक झुग्गी में रहता था। इस बात को लेकर भी उसमें बड़ी हीनता थी क्योंकि सबका आना-जाना उसी रास्ते से था। माँ शहर छोड़कर गाँव में अपने घर चली गई थी। भाई-बहन मिलकर खाना बनाते थे। पिता दिन भर कॉलोनी में पानी सप्लाई और प्लम्बिंग के काम से बाहर ही रहते। बड़ा भाई राज काम पर चला जाता। ऐसे में छोटी बहन को घर में अकेला छोड़कर स्कूल आने की दिक्क़त थी। हमने उससे कहा गया कि वह अपनी छोटी बहन को स्कूल ला सकता है। स्कूल में और भी छोटे बच्चे आते थे। वह उनके साथ खेलती रहती। इससे रोहित स्कूल में थोड़ा नियमित हुआ और अब निश्चिन्तता के साथ रहने लगा।

मैदानी खेलों और पेड़ पर चढ़ने में रोहित की कोई बराबरी नहीं कर सकता था। पढ़ने-लिखने में उसका मन उतना नहीं लगता था। हमने आपस में बात करके रोहित की समस्या को समझने की कोशिश की। हमने कबड्डी की एक टीम बनाई। अब हम स्कूल के बाद आधे घण्टे रोज़ कबड्डी खेला करते। रोहित में गजब की नेतृत्व क्षमता उभर कर आई। इससे बच्चों के बीच न सिर्फ़ उसकी दोस्ती अच्छी बन गई बल्कि उसकी धाक भी जम गई। रोहित अब सबका चहेता था। बच्चे उसकी टीम में होना चाहते थे।

रोहित कई तरह के पशु-पक्षियों की आवाज़ें निकाल लेता था। एक बार स्कूल में बच्चों ने मिलकर एक शॉर्ट फिल्म शूट की। रोहित ने उसके लिए बैकग्राउंड साउंड तैयार किया। जंगल की, पानी गिरने की, अलग-अलग चिड़ियों की, कुत्ते और गाय की, मोटर साइकल, रेलगाड़ी और बर्तनों सहित कई तरह की आवाज़ें तैयार कीं, जिनमें से कुछ तो उसने मुँह से और कुछ विभिन्न तरह के जुगाड़ करके बनाईं।

रोहित का व्यावहारिक गणित अच्छा था। गणित के शिक्षक ने उसके लिए जीवन परिस्थितियों से जुड़ी गणित की समस्याएँ बनाईं जिसे रोहित चुटकियों में हल कर लेता था। नियमित आने, दूसरे बच्चों के साथ अच्छी दोस्ती और तालमेल बनने, शिक्षकों के बीच अपनापन बनने से उसे कक्षाओं में भी मज़ा आने लगा। वह सीखने पर ध्यान भी देने लगा। गणित के साथ ही उसने हिन्दी और अँग्रेज़ी दोनों सीख लीं। सामाजिक विज्ञान की क्लास उसे सबसे अच्छी लगती, क्योंकि उसमें समाज, व्यक्ति, सरकार और उनके आपसी सम्बन्ध रोहित के जीवन से उदाहरण लेकर समझाए जाते। सामाजिक विज्ञान के एक प्रोजेक्ट में उसने स्कूल के पास से गुज़रने वाली नहर की पूरी यात्रा की पड़ताल की। वह कहाँ से निकलती है और कहाँ-कहाँ से होकर गुज़रती है, उसकी कितनी शाखाएँ कहाँ-कहाँ जाती हैं। उसने इस बात का भी अध्ययन किया कि नहर किन महीनों में चलती है और किन दिनों बन्द रहती है, आसपास के कितने किसान उससे सिंचाई का लाभ ले पाते हैं। साथ ही इसका विश्लेषण किया कि उसके ख़ुद के और उस जैसे दूसरे लोगों के जीवन में इस नहर का क्या महत्त्व है, वगैरह। इस प्रोजेक्ट कार्य में रोहित ने सबसे अच्छा प्रदर्शन किया और कक्षा में इसका बेहतर प्रस्तुतीकरण किया।

रोहित स्कूल में छह साल रहा। उसने सभी गतिविधियों में बराबर हिस्सा लिया। झुग्गी हटने के कारण रोहित के परिवार को स्कूल से दूर जाना पड़ा। वहाँ उसने पास के एक सरकारी स्कूल में कक्षा 7 में एडमिशन लिया है। बाद में एक बार वह स्कूल में सभी से मिलने भी आया।

आठ साल की बिन्दु महाराष्ट्र के एक गाँव से आई थी। हिन्दी उसे थोड़ी-थोड़ी तो समझ में आती, पर बोलना उसके लिए बड़ा कठिन था। पढ़ना और लिखना तो न के बराबर ही था। स्कूल में हिन्दी माध्यम की कक्षाओं में शुरू में तो उसे बहुत मुश्किल हुई। वह लगभग एक महीने तक गुमसुम-सी रही, न कुछ बोलती और न ही पूछने पर कोई जवाब देती। बिन्दु की माँ ने बताया कि वह घर जाकर रोती है और कहती है कि उससे यह नहीं हो पाएगा। वह बहुत निराश थी कि वह शायद अब कभी आगे नहीं पढ़ पाएगी।

हम शिक्षकों ने आपस में बात करके उसके लिए कुछ योजनाएँ बनाईं। हमारे एक शिक्षक साथी को मराठी आती थी। उनको ज़िम्मा दिया गया कि वह धीरे-धीरे उससे बातचीत शुरू करें। इस बीच हमने मॉर्निंग गैदरिंग के लिए एक-दो मराठी गीत भी ढूँढ़ लिए और उनको गाना शुरू किया। मॉर्निंग गैदरिंग एक ऐसी प्रक्रिया रही जिसमें काफ़ी संभावनाएँ थीं। एक तो यह बहुत ही अनौपचारिक मंच था, उन्मुक्त था। स्वैच्छिक भी और सामूहिक भी। इसमें सभी के लिए गुंजाइश थी। मराठी गीत की बारी आने पर बिन्दु बहुत ही उत्साह से हिस्सा लेती। इस गीत को लीड करने की ज़िम्मेदारी उसे ही दे दी गई। उसने एक-दो नए गीतों से भी बच्चों का परिचय कराया। पोडियम एक्टिविटी के दौरान सभी बच्चे अपने पिछले दिन के स्कूल-अनुभव को रखते थे। बिन्दु के लिए यह सुविधा रखी गई कि वह अपनी अभिव्यक्ति मराठी में कर सकती है। बाद में हमारे मराठी भाषी शिक्षक साथी हिन्दी अनुवाद करके बाक़ी बच्चों को बता देते।

इसके अलावा कुछ मराठी लोक-कथाएँ खोजी गईं। कक्षा में उन्हें सुनाया गया। बिन्दु ने उनमें से कुछ पहले सुन रखी थीं। उसे बहुत मज़ा आया। उसने अपनी टूटी-फूटी हिन्दी में मराठी मिलाकर कक्षा को उन लोककथाओं के बारे में बहुत सारी नई जानकारियाँ बताईं। इससे बिन्दु का आत्म-विश्वास बढ़ा। अपनी मराठी भाषा को लेकर उसकी हीनता खत्म हुई और बच्चों के साथ उसकी दोस्ती बढ़ी। उसने हिन्दी, गणित, विज्ञान सीखने को एक चुनौती की तरह लिया। स्कूल ने उसकी मदद की और बिन्दु ने उसमें अपनी पहल दिखाई। जल्दी ही बिन्दु न सिर्फ़ हिन्दी बोलने लगी बल्कि हिन्दी पढ़ना और फ़िर लिखना भी सीख गई। स्कूल ने उसे अपनाया और उसने स्कूल को। आगे के सालों में बिन्दु सबसे नियमित और सबसे तेज़ गति से सीखने वाली बच्ची साबित हुई। वह अब अँग्रेज़ी में भी बात कर लेती है। हिन्दी में कहानी और कविताएँ भी उसने लिखी हैं। बिन्दु ने संगीत की नियमित कक्षाएँ की हैं। इससे गाने में उसकी रुचि बनी और बाद में उसने संगीत की विधिवत शिक्षा भी ली। स्कूल में नाटकों में हिस्सा लिया। रिनचिन की लिखी कहानी *'मैं मोर जमीन ला बचावत हों'* के नाट्य मंचन में बिन्दु ने *मति* नाम की लड़की की केन्द्रीय भूमिका बहुत ही ज़बरदस्त ढंग से निभाई। इस वर्ष बिन्दु ने आठवीं कक्षा पास कर ली है। नवीं से आगे की पढ़ाई के लिए वह दूसरे स्कूल में जाने की तैयारी कर रही है।

आठ साल का कृष्णा अपने दादा-दादी के साथ भैंसों के तबेले में रहता है। वह कक्षा तीन तक पास के एक प्राइवेट स्कूल में जाता रहा है। पर अनियमित रहने और अपेक्षित रूप से सीख नहीं पाने के कारण उसे स्कूल से निकाल दिया गया।

सुबह चार बजे उठकर मवेशियों को चारा-पानी देना, साफ़-सफ़ाई करना, और फ़िर दूध दुहने में दादा-दादी की मदद करना, कृष्णा का रोज़ का काम है। सुबह 7 बजे तक कई लोग तबेले पर आकर दूध ले जाते हैं। कइयों के घर तक दूध पहुँचाने कृष्णा साइकल से जाता है। वह 8 बजे तक यह सब काम निपटा लेता है। इसके बाद रसोई में दादी की मदद करता है और जो कुछ भी बन पाता है, उसे खाकर 9.30 तक स्कूल आता है।

जब उसने स्कूल आना शुरू किया, उसे कुछ भी समझ में नहीं आता था। हाँ, उसका व्यवहारिक गणित ठीक था, सो गणित की कक्षा में वह जल्दी काम कर लेता था। विज्ञान के प्रयोगों में उसकी रुचि थी। पर विज्ञान की बातें उसे अटपटी लगतीं। कृष्णा के बारे में हमने स्कूल में अपने साथी शिक्षकों से बात की और उसके लिए अलग से कुछ प्रयास किया जाना तय किया।

पर्यावरण की एक क्लास के लिए बच्चों के एक समूह को पास की डेयरी में जाकर उस व्यवसाय से जुड़े सभी पहलुओं को समझने का काम दिया गया। कृष्णा को इस समूह की मदद करने के लिए कहा गया। कृष्णा ने इस प्रोजेक्ट में सबके साथ बहुत उत्साह से हिस्सा लिया और अपने दादा-दादी से बच्चों की बात करवाई। डेयरी के बारे में ख़ुद भी बहुत-सी जानकारियाँ दीं। गाय-भैंसों को खिलाने वाले चारे-भूसे की मात्रा और लागत, कुल दूध की मात्रा, दूध के भाव से कुल आमदनी, मवेशियों की दवाइयों आदि का खर्च, मेहनत आदि का हिसाब बनवाया। बच्चे भी ख़ुश थे और कृष्णा भी ख़ुश। इससे उसका आत्म-विश्वास बढ़ा और बच्चों से भी दोस्ती बढ़ी। इस तरह स्कूल के नियमित सीखने-सिखाने में भी उसकी भागीदारी बढ़ गई।

कृष्णा घूमते-फ़िरते हुए सड़क से पुरानी मोटर, सेल, वायर और बिजली या इलेक्ट्रोनिक उपकरणों के दूसरे पुर्जे उठा लेता था। एक रोज़ ऐसे ही एक ट्रान्जिस्टर का मदर बोर्ड उसे मिला। वह उसे स्कूल ले आया। टीचर के साथ मिलकर उसने उसके बारे में समझा। स्कूल से नए सेल लेकर कुछ वायरिंग जोड़कर एक पुराने स्पीकर से उसे कनेक्ट किया और उसमें भोपाल का एफएम रेडियो चैनल चलने लगा। उसकी ख़ुशी का ठिकाना न रहा। सब बच्चों ने उसकी वाह-वाह की। स्कूल के आँगन में एक टेबल पर उस ट्रान्जिस्टर को रखा गया। सब बच्चों ने उसके चारों तरफ़ गोल घेरा बनाया और उस दौरान प्रसारित हो रहे गाने सुने। कृष्णा उस दिन का हीरो था।

अगले दिन कक्षा में टीचर ने सबको ट्रान्जिस्टर की कार्य-प्रणाली समझाई। इसके बाद कृष्णा स्कूल में नियमित हो गया। उसे हर चीज़ सीखने की ऐसी ललक लगी कि स्कूल के बाद भी रुककर वह शिक्षकों से बातों को समझता रहता। स्कूल के उमंग विज्ञान मेले में कृष्णा ने तीन तरह की बोट के मॉडल बनाकर प्रस्तुत किए। एक में उसने गुब्बारे से निकलने वाली हवा की विपरीत ताकत की युक्ति लगाई। दूसरी में रबर को लपेट कर उसकी संचित यांत्रिक ऊर्जा से एक चप्पू घुमाया। और तीसरी में एक पुरानी मोटर की मदद से बोट में दोनों ओर दो प्रोपेलर घुमाए। उसने मेले में आए विज़िटर्स के प्रश्नों के जवाब भी बहुत अच्छी तरह से दिए।

इससे शिक्षकों के साथ उसकी दोस्ती और भरोसा भी बढ़ा। स्कूल में सीखने की प्रक्रियाओं में उसकी भागीदारी भी बढ़ी। कृष्णा पिछले चार साल से स्कूल में है। उसने हिन्दी, अँग्रेज़ी सहित गणित, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान सभी विषयों में अच्छी प्रगति की है।

नौ साल की पूजा एक हियरिंग इंपेयर्ड बच्ची है। उसके कान

में कॉक्लियर इंप्लांट किया गया है पर सुनने और बोलने दोनों में ही उसे दिक्क़त रही है। जब वह स्कूल आई तो बिल्कुल चुप-चुप रहती थी। मॉर्निंग गैदरिंग में जब सब बच्चे गीत गाते, पूजा सिर्फ़ उन सबकी ओर देखती और कभी बीच-बीच में कुछ शब्द दुहराती। उसे सुबह की यह सभा बहुत भाती। बाक़ी कक्षाओं में उसका बिल्कुल भी मन न लगता था। वह सिर्फ़ आर्ट और क्राफ्ट की क्लास का इन्तज़ार करती। वह एक नामी प्राइवेट स्कूल से आई थी। वह वहाँ की कक्षा-प्रक्रियाओं, कृत्रिम अनुशासन के दबाव और शिक्षकों के बर्ताव से शायद डरी और उकताई हुई थी।

कक्षा में जाने की अनिवार्यता को लेकर हमने उसके ऊपर कोई दबाव नहीं बनाया। वह ज़्यादातर छोटे बच्चों की क्लास में जाकर बैठ जाती। कई बार वह कहानी की किताब लेकर उन्हें कहानी सुनाती। एक-दो महीने के बाद पूजा ने गणित की क्लास में हिस्सा लिया। दरअसल उस रोज़ क्लास में भिन्न (फ्रैक्शन) पढ़ाया जा रहा था। टीचर को पता था कि पूजा को आर्ट एंड क्राफ्ट में रुचि है, तो टीचर ने गत्ते के एक वृत्त में ½, 1/3 और ¼ काटने के लिए पूजा को कहा। पूजा ने फौरन पेंसिल और स्केल की मदद से गत्ते में ½, 1/3 और ¼ की आकृतियाँ खींच दीं। अब टीचर ने कहा कि उन्हें अलग-अलग रंगों से रंग दे ताकि वे समझ में आएँ। पूजा ने बिना देर लगाए यह काम किया। यह उसकी रुचि का काम था। इस काम के मार्फ़त आज उसने गणित की क्लास में रुचि ली और इस गतिविधि के दौरान भिन्न की शुरुआती अवधारणा भी सीख ली। फ़िर तो टीचर ने पूजा को ऐसे और कई सारे काम दिए। समूह में भी काम करने को कहा। इससे उसकी दोस्तियाँ भी बनीं। पूजा ने कुछ काम घर से भी करके लाना शुरू किया।

मॉर्निंग गैदरिंग में सुनने की दिक्क़त के कारण पूजा रुचि होने पर भी उसका पूरा आनन्द नहीं ले पाती थी। शेयरिंग मीटिंग में टीचर्स ने आपस में बात करते हुए इस समस्या को चिन्हित किया। उन्होंने सुबह की सभा में गाए जाने वाले गीतों की ऑडिओ सीडी बनाकर पूजा को दी ताकि वह घर पर इन गीतों को सुन सके। इसके बाद पूजा न सिर्फ़ मॉर्निंग गैदरिंग का मज़ा लेने लगी बल्कि दूसरी कक्षाओं में भी धीरे-धीरे जाने लगी। वह काफ़ी मुखर हुई। उसकी लिखने की आदत में भी ज़बरदस्त सुधार हुआ।

विज्ञान के प्रयोग करने और मॉडल बनाने में वह काफ़ी समय तक क्लास में ही बैठी रहती। वह टीचर से बात करके घर से सेल, मोटर, वायर, चुम्बक लाती थी। उन्हें जोड़कर बिजली के स्विच और चुम्बक के कई सारे प्रयोग करती थी।

बच्चों के साथ ही शिक्षकों के साथ वह अच्छी तरह घुल-मिल गई। सुनने की दिक़्क़त स्कूल में उसके लिए कोई रुकावट नहीं बनी। किसी ने उसकी इस कमी को लेकर न कोई बात की और न ही उसे बाधा माना। वह संगीत की कक्षा में भी पूरी तन्मयता से भाग लेती और गाने याद करती। स्कूल के वार्षिक समारोह में उसने एक नाटक में भी हिस्सा लिया। सामूहिक गीतों की प्रस्तुति में वह बढ़-चढ़कर भाग लेती और बिना हिचक के गाती।

दस साल की स्वाति दिल्ली के नोयडा से ट्रान्सफर होकर भोपाल आई थी। उसे बोलने सम्बन्धी समस्या थी। वह बोलने में काफ़ी अटकती थी और इसीलिए बात करने में हिचकती थी। स्कूल के मित्रतापूर्ण और खुले वातावरण में सबके लिए जगह थी। स्कूल में वह जल्दी ही सबसे घुल-मिल गई क्योंकि उसके जीवन में इसकी बहुत कमी थी। स्कूल में किसी ने भी बोलते समय उसके अटकने पर ध्यान ही नहीं दिया। टीचर भी जान-बूझकर स्वाति से सवाल पूछते ताकि वह जवाब दे और बोलने की पहल करते हुए उसका आत्म-विश्वास बढ़े। इसका असर यह हुआ कि स्वाति खूब बोलने लगी। वह कविताएँ बोलती, मॉर्निंग गैदरिंग के गीत गाती। उसकी स्पीच में भी काफ़ी सुधार आया। दरअसल स्वाति कि समस्या यह थी कि इसके पहले उसे बोलने ही नहीं दिया गया था या बोलने पर हतोत्साहित किया गया था।

उसकी माँ ने बताया कि नोयडा के जिस स्कूल में स्वाति पहले पढ़ती थी, वहाँ वार्षिक समारोह के 15 दिन पहले से ही उसे स्कूल आने से मना कर दिया गया था। न तो उसे किसी गतिविधि में हिस्सा लेने दिया गया और न किसी रिहर्सल में आने की इजाज़त थी। इससे स्वाति का आत्म-विश्वास काफ़ी टूट गया। उसमें एक हीनभावना घर कर गई थी, जिसके कारण उसकी बोलने की समस्या और बढ़ गई थी।

यहाँ स्कूल में भाषा-शिक्षण की कक्षा में हर रोज़ पाठ के बाद उसका नाट्य मंचन किया जाता। स्वाति उस हर गतिविधि में हिस्सा लेती। वह स्कूल में नियमित थी। उसने वार्षिक समारोह में भूपेन हजारिका का गीत- *विस्तार है अपार... प्रजा दोनों पार...* गाया। सुनने वाले हैरान थे। उसकी आवाज़ और लय कहीं भी नही अटकी!

यह बच्चे अनन्त सम्भावनाओं से भरे हुए बच्चे हैं। हर बच्चे में एक से बढ़कर एक प्रतिभा और क्षमता है। कभी सामाजिक-आर्थिक तो कभी शारीरिक-मानसिक कारणों से यह सीखने की प्रक्रिया में अटकते हैं। स्कूल की ज़िम्मेदारी है कि इन सम्भावनाशील बच्चों की ज़रूरतों और सीमाओं को पहचानकर उनके लिए जगह और अवसर बनाएँ, ताकि वे अपनी क्षमताओं को उभार पाएँ, बाक़ी सबके साथ बराबरी से चल पाएँ, अपनी समझ और दक्षता पर भरोसा कर पाएँ और

वह सब सीख पाएँ जो उनके आस-पास उपलब्ध है और जो सीखने की उनसे अपेक्षा की जा रही है।

स्कूल की परिपाटी में उदारता, लचीलापन, धैर्य तथा समतावादी एवं मानवीय नज़रिया लाने की ज़रूरत है। तब फ़िर हर बच्चा सब कुछ सीख सकता है।

सुरक्षा कारणों से बच्चों के नाम बदल दिए गए हैं।

अनिल सिंह पिछले 15 वर्षों से शिक्षा, ख़ासकर स्कूली शिक्षा, के क्षेत्र में सक्रिय हैं। भाषा-शिक्षण के साथ-साथ वे बच्चों की दैनिक गतिविधियों में थिएटर का भी समावेश करते हैं। वे कहानियाँ सुनाने में विशेष रूचि रखते हैं। उनके कक्षा अनुभव एवं अन्य शैक्षिक मुद्दों पर लिखे लेख नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं। वर्तमान में वे आनन्द निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल, भोपाल के साथ शिक्षा के वैकल्पिक मॉडल पर काम कर रहे हैं। उनसे bihuanandanil@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

'शिक्षा की भूमिका को साक्षरता और किताबी ज्ञान से आगे व्यक्ति-निर्माण तक देखना अधिक महत्त्वपूर्ण है। देखने की ऐसी नज़र तो लोगों के बीच अन्तःक्रिया करके ही आ पाती है, न केवल नज़र आ पाती है बल्कि बच्चों के साथ काम क्या करना है और कैसे करना है, इनके बीजों का अंकुरण भी हो पाता है जब अभिभावकों के साथ हमारे जीवन्त सम्बन्ध होते हैं।'

- जगमोहन सिंह कठैत 'बँधे इक डोरी से : बच्चे, समुदाय और शिक्षक' पेज 49